निकारागुआ : चुनाव और चुनौती

नई दुनिया (इंदौर) 22.12.1989

शशिधर खाँ

निकारागुआ के राष्ट्रपति डेनियल ओर्टेगा ने आखिरकार अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के सशर्त शांति प्रस्ताव को अस्वीकार कर ही दिया, बल्कि यों कहें कि श्री ओर्टेगा के लिए सिवाय इसके कोई चारा नहीं था।

डेनियल ओर्टेगा को अपदस्थ करने के लिए संघर्षरत कोंट्रा विद्रोहियों को मदद देना तो जॉर्ज बुश बंद करने को तैयार नहीं हैं, लेकिन यह अवश्य चाहते हैं कि निकारागुआ की सैंदिनिस्ता सरकार सोवियत संघ और क्यूबा से संपर्क तोड़ दे।

और अब, जबकि २५ फरवरी, १९९० को निकारागुआ में चुनाव होना तय है—१२ पार्टियों को मिलाकर बनी सैंदिनिस्ता नेशनल लिबरेशन फ्रंट की सरकार जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर जनमानस को अपने पक्ष में करने के लिए व्यापक अभियान चला रही है, वहीं दूसरी ओर जॉर्ज बुश इसी अवधि में कोंट्रा विद्रोहियों को इतना मजबूत बना देना चाहते हैं, ताकि ताकत की बदौलत वे चुनाव में गड़बड़ी पैदा करके सत्ता हथिया लें।

डेनियल ओर्टेगा को जन समर्थन प्राप्त है, लेकिन तब भी उनके समर्थकों ने देश के सारे १७ प्रांतों में अटलांटिक तट के आदिवासी इलाकों में गजब का प्रचार अभियान छेड़ दिया है। अंतरराष्ट्रीय सहानुभूति भी श्री ओर्टेगा के साथ है।

गृहयुद्ध ने निकारागुआ की अर्थ व्यवस्था चरमरा दी है और सभी छोटे-बड़े देश इस बात से वाकिफ हैं। इसलिए कई देश स्वेच्छा से निकारागुआ की मदद करने को तैयार हैं ताकि वहाँ की सरकार चुनाव का खर्च पूरा कर सके, जो एक अरब से भी ज्यादा तक जाने का अनुमान है। कनाडा, स्पेन, स्वीडन और फिनलैंड ने चुनाव पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण के लिए चुनाव उपकरण और पैसा जुटाना शुरू कर दिया है। योरपीय आर्थिक समुदाय सहर्ष सहायता देने को राजी हो गया है। इतना ही नहीं, अमेरिका के कई शांतिप्रिय संगठनों ने चंदा उगाही शुरू कर दी है।

सबको उम्मीद है कि बिना बाहरी (अथवा अमेरिकी) हस्तक्षेप के निकारागुआ का शांतिपूर्ण हल निकल आएगा और अमेरिका भी उसे मानने को बाध्य होगा, बशर्ते कि अमेरिका इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न न बना ले।

चुनाव निकारागुआ शांति योजना के तहत कराया जा रहा है और इस योजना में अमेरिका कहीं नहीं है, क्योंकि ओर्टेगा की वजह से उसने योजना का विरोध किया था। नवंबर के मध्य में जब शांति योजना का प्रारूप तैयार हो रहा था, उसी समय निकारागुआ की वामपंथी सरकार ने प्रस्ताव रखा कि अमेरिका को इस योजना में तभी शामिल किया जा सकता है, जब वह हर हालत में ५ दिसंबर तक कोंट्रा विद्रोहियों को मदद देना बंद कर दे और होंडुरास हथियार भेजने पर भी रोक लगा दे, जहाँ उनका अड्डा है। अमेरिका होंडुरास के माध्यम से कोंट्रा विद्रोहियों को हथियार भिजवाता है। होंडुरास के लिए भी कोंट्राई अड्डे के लिए जगह देना मजबूरी है, क्योंकि वह अपनी सैनिक और वित्तीय जरूरतों के लिए अमेरिका का मोहताज है। अमेरिका ने यह प्रस्ताव मानने से इंकार कर दिया।

डेमोक्रेटिक सदस्यों के दबाव में आकर अमेरिकी कांग्रेस ने फरवरी, १९८८ में कोंट्रा विद्रोहियों को सैनिक सहायता बंद कर दी। राष्ट्रपति बुश के लिए मुश्किल हो गई, उन्होंने दिन-रात एक करके कांग्रेस के प्रभावशाली नेताओं का समर्थन किया। बड़ी खींचतान के बाद कांग्रेस चार करोड़, अस्सी लाख डॉलर की गैर-सैनिक मदद देने को राजी हुई जिसकी समीक्षा का काम प्रमुख समिति को सौंपा गया। कांग्रेस ने हाल में निकारागुआ के चुनाव के लिए ९० लाख डॉलर खर्च करने की स्वीकृति दी जिसका एक तिहाई भाग विपक्षी गठबंधन नेशनल एन्डोमेंट फॉर डेमोक्रेसी को जाएगा। इस गठबंधन में भी १२ पार्टियाँ हैं, जिनके लिए कोंट्रा विद्रोही काम करते हैं। निकारागुआ के चुनाव नियम के अनुसार राष्ट्रीय चुनाव में विदेशी अनुदान लेने की अनुमति तो है, लेकिन बाहर से आने वाली किसी भी राशि का ५० प्रतिशत भाग सर्वोच्च चुनाव परिषद को मिलता है।

"राष्ट्रीय विपक्षी संघ के नाम से जाना जाने वाले दक्षिण पंथी विरोधी गठबंधन ने अमेरिकी सरकार से एक करोड़ डॉलर चुनाव प्रचार के लिए और माँगा है। गठबंधन नेताओं का कहना है कि सैंदिनिस्ता सरकार को कम्युनिस्ट देशों से इससे दो गुनी ज्यादा मदद मिली है। निकारागुआ में राष्ट्रपति पद के लिए विपक्षी उम्मीदवार और देश के प्रमुख दक्षिण पंथी अखबार "ला प्रेंसा" के संपादक की पुत्री वॉलेटा बेरियोस डी केमोरो अपने कई सहयोगियों और कोंट्रा नेताओं के साथ वाशिंगटन में जमी हुई हैं, लेकिन अमेरिका के दक्षिण पंथियों को लग गया है कि निकारागुआ में उनकी पार्टी की पराजय निश्चित है, इसलिए वे जॉर्ज बुश को पैसा फँसाने से मना कर रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति सामने से पैसा भले न दें, पिछले दरवाजे से कोंट्राओं की पीठ ठोंक रहे हैं और उनके इशारे पर कोंट्रा छापामारों ने इधर-उधर से निकारागुआ में घुसपैठ भी शुरू कर दी है। अमेरिकी विदेश विभाग का ही कहना है कि दो हजार कोंट्रा छापामार निकारागुआ में प्रवेश कर चुके हैं, जबकि डेनियल ओर्टेगा यह संख्या दो गुनी बताते हैं। निकारागुआ सरकार के अनुसार कोंट्राओं ने चुनाव में बाधा पहुँचाने की तैयारी कर ली है। मतदाता के रूप में नाम दर्ज कराने पंजीकरण केंद्र जा रहे सैकड़ों लोगों को उन्होंने जान से मार डाला है और जनजीवन में आतंक फैला रहे हैं, ताकि लोग उनके डर से वोट डालने न जा सकें।

नवंबर में ही निकारागुआ सरकार ने संयुक्त राष्ट्र परिषद और अमेरिकी राज्य संगठन को इस बात की जानकारी दी थी, क्योंकि कोंट्राओं के घुसपैठ का पता उसी समय चल गया था और सुरक्षा परिषद् द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों और अमेरिकी राज्य संगठन के सदस्यों को मिलाकर एक समिति तभी बनाई गई थी, जिसका काम घुसपैठ रोकने के उपायों पर विचार करना था। समिति अभी विचार कर रही है और घुसपैठ चल रही है। सैंदिनिस्ता सरकार को सोवियत संघ पर ही पूरा भरोसा है।

निकारागुआ के राष्ट्रपति श्री ओर्टेगा पहले सोचते थे कि जॉर्ज बुश पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन जैसे नहीं होंगे जिन्होंने अपने कार्यकाल में कभी उन्हें चैन से सांस नहीं लेने दी। लेकिन अब उनका मोह भंग हो रहा है। तब भी श्री ओर्टेगा को थोड़ी बहुत आशा तो है ही।

अक्टूबर में जब सोवियत विदेशमंत्री एडुअर्ड शेवर्दनादजे मानागुआ आए और कहा कि अगर अमेरिका चाहता है कि निकारागुआ को सोवियत हथियार मिलने बंद हो जाएँ तो वह पहले कोंट्रा को मदद करना छोड़ दे। इससे जहाँ श्री ओर्टेगा का मनोबल बढ़ा वहीं उसके थोड़े दिनों बाद यह देखकर उन्हें संतोष हुआ कि अमेरिकी विदेशमंत्री सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव और बुश के बीच शिखर बैठक की तैयारी कर रहे हैं। जॉर्ज बुश पहले भी सोवियत संघ से संबंध सामान्य बनाने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं।

अमेरिका के अहाते में पिछले दस वर्षों से वामपंथी सैंदिनिस्ता सरकार का टिका होना ही अपने आपमें काफी अहमियत रखता है और अगर वाकई डेनियल ओर्टेगा चुन लिए जाते हैं, तो यह ऐतिहासिक जीत होगी।